पद ७६

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

कोण समाधी कशी ही सांगा। यमनियमासन योग अष्टांगा।।धु.॥
मन प्राणा जो जाणुनी आवरी। तो तूं खरा कीं मायिक विवरी।।१॥
स्वप्नीं जिर हा ईशिह झाला। कोण पुसे त्या तुच्छ सुखाला।।२॥
विना योगशिक हठ विद्या। स्वप्नीं कशा वळती ह्या सिध्द्या।।३॥
विश्वरूप धरुनी जग रक्षी। सह त्रिपुटी भासक आणि साक्षी।।४॥
निमिष काल युग मानुनी कामी। ब्रह्मलोक उत्तरपथ गामी।।५॥
भ्रांतिमुखे धरी महाभिमाना। प्रेरक मी जग जीव हे नाना।।६॥
दृश्य लोक मायागुण पाही। न्याहाळुनी पाहतां मुळींच नाहीं।।७॥
जोंविर हा भ्रममूल तुटेना। निर्विकल्प मार्तांड दिसेना।।८॥